२८

१ ॐ कुद्रय नमस्वाहा २ ॐ आगनेय नमस्वाहा २ ॐ नायनम
स्वाहा २ ॐ नयक्षयं नमस्वाहा २ ॐ सूर्य नायं नमस्वाहा २ समम
यक्काय ॥ श्री न ग ॐ वाचून नमा स्वाहा २ ॐ कुवेराय्य नमस्वाहा २
ॐ ह्रूं श्र नमस्वाहा २ ॐ नू वृ कुन्द्रा नमस्वाहा २ ॐ थव कन्द्रा
गनन मस्वाहा २ ॐ ब्रह्मासनि नमस्वाहा २ आमिश्रा ॥ ग्रा॥ ॐ न
म श्री गाना श्रमय विधि स्वाहा २ तथा । ॐ नमश्रोर्हं नवगाहिनि

विधिस्वा हा३ स्वथा॥ ॐ नम का६ कुमा समा हा का ९ ईन स्वा हा
३स्वथा॥ ॐ नम त न पु न विष्ण कृ ट कनाविधि स्वा हा३ स्वथा॥
ॐ नम का मृ दा श्री विधि स्वा हा३ स्वथा॥ ॐ कि ते १ स व का नि स्वाहा॥
ध ३ चि कु ट ३ ४३ ग प या व न कं प न स्या क ना स॥ १ ॐ नमोगुरू
न्हा ला बा मृ दा वं न्ह मन्ह प्र ग न न म हृ मा, मन्ह माला कना ला कना ला,
क म ष्या का म लू प ने ह व न क ता [illegible] हि, लू दा य हि लू दा वं

ते, ग्र ह क न शाकु ला मं नु मं निना मं ति, कुमा लि कुम ह नमं हि व ल
र्ह न वि, विस्न ल मा य्यीं॥ ध ३ थ्व नु न का की ग प या व ह्न स ट य को ३
थ्व थो त य मा ने मा य थ॥

श्री २ ऱ्ह सि धा गु रू आ लु, वं क्षा य नि, मा ना नद्यो क्षी गन कना थ, सी पा वि
ना य क ग ने स, बुत यो लं क्ष न जि कं ता डा, व वि क्षा य मा न, बूं ना, जि न य, बु
बू न जि व वा य ह्रे स्वा हा॥ थ्य ८॥ थु मंन, भ व न क हः ह व, वं ग स, रुय

थन्ने यता, दव्रासाखव, मदनसा, चाडनानानाडना, क्रिडना, दवमूनिडना
जयुयावु, वव्रासाखहयाकयक काकयकाव व्याय, थमकयमदू ४॥ ॥
१ ते हि थागूनुगाडुना वायानस्मोिकं सेवन्द, संसानरुयनास, कातिजमकितया
यप्रनन, सिनाम, आनाम॥ थान १॥ थमेन, वासडानत, थानथ, दनवनस
थानथं, थूतियाडन, दाकिनि, साकीनि, हतु, यिसाव, थानसान, धूडे विना
डानि ४॥ ॥ १ ॐनमा गूनुगाडु, ॐ सानामकी ना [illegible] कुनासद, गर्थक
कानदक्तथाथ, गूकहुकजाड्, याईनिमश्रा गथ्रा॥ थान १॥ कानडाक्का, ज
तनक्का, मिनयु क्का, क्काकनयुक्का, छियानडाक्का, विनडाक्का, रुटिनक्का
क्कानु डाक्का, ॐ गुनडाक्का, थमेनु यसनाय ४॥ ॥ ।।
१ ॐनमा गूनगाडु, जनिडहू रुठस्वाहा॥ १॥ थमेनमादयायगुडीनकडो
ननाननननडा, सादयायथ॥ ॥ २ ॐनमश्री गूनुगाडु, ॐ नचूमनगाडु
नानागाडु, त्रिरवागाडु, गा२गदुदु स्वाहा॥ थान १॥ क्का या मथानननतिव कायरवननति
नगसायमान। तुनायकं थगम २गमदावीडाक्वानेमान॥ ।ना

श्री
नाम
दुर्ग
दके
अस्कठ्धुग छनचोय
है गथुट सँ चोयवगा
याथगवयाथगग्ग्गा
क्रूहयतायन सनयाव
को ढ्कं कोस दयोवक्रखाकं

धर्मरत्न वज्राचार्य सुरत श्री महाबिहार

II-82 'B'

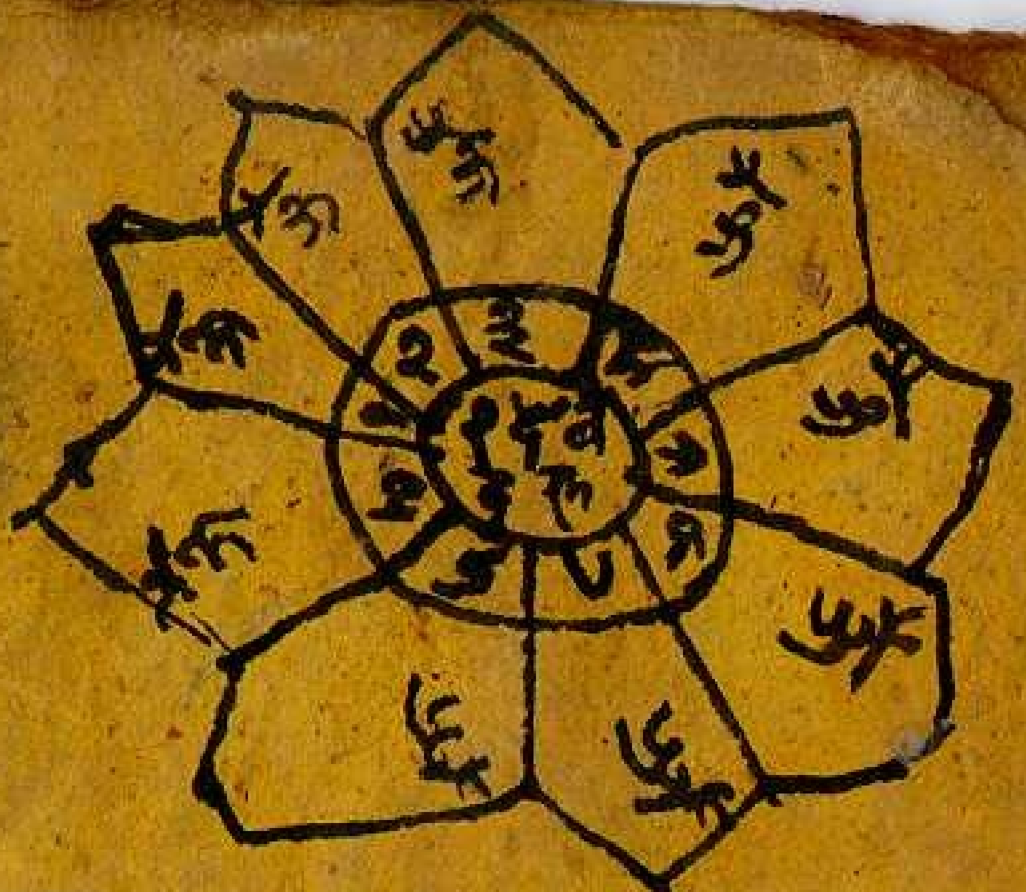

यानद्व धनया तिनक्तक प्रत सखायावस दुन
न ह्ला ह्ना चानचो न क्क कवा का या न थ तं क्र गन
याव थ द थ ल मिसतया वदय या ह्लायमद

नवियोगश्च वर्षस्तव॥ ३६ ॥नीव व्याधि विनिर्मुक्तो धर्म स्तव
र्द्धतमति॥ उत्तमा स्तवं तु यतिन्तु॥ स्तं स्तवति मानवं॥ ३७ ॥ती
र्थकोटि सहस्राणी यत्स्तं सहगनन॥ नतस्तं समवाप्नोति. पाठ
लोत्तमास्तवं॥ ३८ ॥इति श्री स्कन्दपुराणे उत्तमास्तवस्तो
मितु त्रं समाप्त॥ ॥१ ॐ नमः श्री मन्त्रयाय देवाय॥ कैलाश
कय नय.गुर्द्ध स्तुतिक सन्निरे तमाम विहीन तु जनामन्त्र विवर्ज

वेदगतगसि.ज्ञानिनांज्ञानरूपासि.मञ्जुश्रीयेनमोस्तुते॥जगज्जीवन
गस्त्रात्रःप्रज्ञास्त्वंरागतांप्रभुःकन्दर्पःसर्व्वतीर्थनां.मञ्जुश्रीयेन
मोस्तुते॥तेनत्वंसिद्धियानांच.सर्व्वज्ञानप्रबोधकः॥सांख्यया
गन्धर्वनाञ्च.मञ्जुश्रीयेनमोस्तुते॥त्रयालितंवरूपश्च.पितुस्त्वं
पदमवच.चतुर्यागकसाधन.मञ्जुश्रीयेनमोस्तुते॥नवरवह्निरू
पासि.सामरूपासिपूरक.उष्ककानिवरूपासि.मञ्जुश्रीयेनमोस्तु

ते॥सूर्यकरासिपापानां.पूज्यानाञ्चापिवर्द्धनं.त्वंरुद्रःप्रयमा
न्निर्यं.मञ्जुश्रीयेनमोस्तुते॥त्वमग्रवाचस्त्वमाधान.त्वमीशंतुवनत्र
यम्.सत्वंनरत्वमवात.मञ्जुश्रीयेनमोस्तुते॥त्वंसामत्वंदिनेश
श्च.त्वमात्माप्रकृतिःपरा.सूक्ष्मत्रिंश्चनानाथ.मञ्जुश्रीयेनमो
स्तुते॥सर्व्वहृदयस्थमवल.सर्व्वत्वानुबाभय.सर्व्वज्ञान.पदानन्द
मञ्जुश्रीयेनमोस्तुते॥त्वंमात्मासर्व्वप्रकृतिस्त्वंगुणमानामधीश्वन

॥ त्वंयद्भः सर्वयज्ञ

ः सर्वानन्दमयायभव. म स्तूरूयन नमामुत ॥ त्वं वृद्धि र्बोधलक्षणा. सद्दबक्ष त्वमवात. म स्तूरूयन नमामु

नां. त्वं वृद्धि र्बोधलक्षणा. सद्धबक्ष त्वमवात. मस्तू रूयन नमामु

तं ॥ सर्वमायाकलाधव. सर्वेन्द्रियपवायव. सर्वेन्द्रियगुप्तधास

म स्तू रूयन नमामुतं ॥ त्वंयं गन्धस्तुथास्यर्नः मन्द्रसंस्कावन्त्रवव.

चतुःप्रकावमवषां. म स्तू रूयन नमामुतं ॥ चतुर्विधनीस्वक्षीः

नां. दत्तुस्तंकावनं न्यवनः ॥ रावावगवयनिक्षिन्न. म स्तू रूयन नमामु

तं ॥ त्वमाकाम्नारस्मि वदानां. दवानांच सदानिवः ॥

वमक्षिः मक्षीनां मस्तू रूयन नमारस्तुतं ॥ स्क्रावनं गतं म

यावक्षि चति द दिनि. जीव तीयाद्धलाकाय. मस्तू रूयन नमार

तुतं ॥ सामस्त्र्यानिमधात्क. ध्यापि सदानिव. कालत्रयमहाकास.

स्तू रूयन नमामुतं ॥ प्रवृद्धवाप्रवृद्धव. त्वं रागलूनास्प्रशा. स्थि

नदवं म. स्तू रूयन नमामुतं ॥ ध्यानि त्वंध्यामरूपारस्मि. नगः

II-४२ A

धर्मरत्न वज्राचार्य पुस्तक श्री महाविहार

२८५

ग॥ सर्व्वार्थसम्पदाधारं. सर्व्वज्ञानकृतालयं. कृतान्तरिपुमाद्यं. स्वा.
सुखासिनं सदाशिवं॥ यत्र ब्रह्मसुरे भावज्ञा. ज्ञानरूपमवनी मवा॥
कृतायायनदेवेंग विसाग्रु सर्गमसोरवतु॥ तत्र ब्रह्मादिमहादेवला
कानां हितकाम्यया॥ ॥श्रीसदाशिवउवाच॥ शृणु त्वं ब्रह्मन्नृप वः
क्ष्मामि. विलायुर्म्म निसहूमथ संजातः कर्म्मनमयन. व्याधिमृत्यु
विवर्ज्जितं॥ तस्मिन्नेकान्तवधानं. सलिलौघपविप्लुताकृतानन्ते

यन्त्रमर्थं मृत्युनाममृत्युयलिवाणस्य संकीर्त्तनान्नित्यं. मुनिरिर्म्म
मृत्युञ्जितधातभवकीर्त्तिर्यद्धक्र्नु मृत्युञ्जयन्नैसंमया॥ ॐ नमः दे
वाधिदेवं. सर्व्वप्राणहतामृतानाद्यालिनामधिनाथस्तत्वं. मृत्युञ्जयन
मास्तुते॥ ददिनां जीवरूपाय सि. जीवाजीवस्यकावन्नं॥ जगन्नाथ
रूकत्वं हि. मृत्युञ्जयनमास्तुते॥ हिमाद्रिनिखवनातास. सया
वीबीमनोदन। पूजुत्वाक कृतातास. मृत्युञ्जयनमास्तुते॥ ना

गतेन महासुखाद्वय. सर्व्वज्ञानैककायस्था।। यानि त्रातानि लोकानां. मञ्जु
श्रिये नमोस्तु ते ।। निर्गतानेककायस्था. सर्व्ववासनमानसा ।४। ग
च्छन्ति यत्र संकल्पेन. सिद्धविद्याधरास्तथा।। साध्यान्य बुद्ध वन्दा
थाभिर्नी सत्ता वृत्ते. मारतान्यदि(...)नागा ।४। सर्वकावनाशमास्तथा।। कि
नास्ति रयितवध्यानात्. मञ्जुश्रिये नमोस्तु ते ।। यध्या यन्ति यत्र मन्त्र
लि. मञ्जय निर्नवादय ।५। नत मञ्जु वर्णयान्ति. मञ्जुश्रिये नमो

स्तु ते ।। त्वमनादि निर्नन्कर्म्य. निर्व्वाणि निरविकारिणी. नकि त्वमवदर्व
त. मञ्जुश्रिये नमोस्तु ते ।। त्वमकानिष्कलादद्व ।६। सकलं तु व
त्त्रयं. श्रुति ह्रु क्षागिरूपत्वं. मञ्जुश्रिये नमोस्तु ते ।। श्रुतं को
कानि सम्यत्. श्रुतन्नास्तन संक्षिन. श्रुतन्नि नकि त्वम्हाग. म
ञ्जुश्रिये नमोस्तु ते ।। व्यका व्यकाख्वरूपटा. व्याप्तं विश्वमनन्तकं
विश्वात्मा विश्वरूपत्वं. मञ्जुश्रिये नमोस्तु ते ।। त्वं हि नं ।७। पद्म

ञ्लि ट्लि त्लि व्लि ब्लि ष्लि स्लि ह्लि क्ष्लि ४॥ ॥क्लौ ख्लौ ग्लौ घ्लौ व्लौ क्ष्लौ ना॥

॥ ॥क्लू ख्लू ग्लू घ्लू ङ्लू च्लू छ्लू ज्लू झ्लू॥ ॥क्लू ख्लू ग्लू घ्लू ङ्लू

च्लू छ्लू॥ ॥क्ले ख्ले ग्ले घ्ले ङ्ले च्ले छ्ले ज्ले झ्ले॥ ॥क्ले ख्ले ग्ले

घ्ले ङ्ले च्ले छ्ले॥ ॥क्लो ख्लो ग्लो घ्लो ङ्लो च्लो छ्लो॥ ॥क्लौ ख्लौ

ग्लौ घ्लौ ङ्लौ च्लौ छ्लौ॥ ॥क्लं ख्लं ग्लं घ्लं ङ्लं च्लं छ्लं॥ ॥क्म ख्म ग्म

घ्म ङ्म च्म छ्म ज्म झ्म ञ्म ट्म ठ्म ड्म ढ्म ण्म त्म थ्म द्म ध्म न्म प्म फ्म ब्म भ्म

म्म य्म र्म ल्म व्म श्म ष्म स्म ह्म क्ष्म ४॥ ॥क्मा ख्मा ग्मा घ्मा ङ्मा च्मा

छ्मा ज्मा झ्मा ञ्मा ट्मा ठ्मा ड्मा ढ्मा ण्मा त्मा थ्मा द्मा ध्मा न्मा प्मा फ्मा ब्मा भ्मा

म्मा य्मा र्मा ल्मा व्मा श्मा ष्मा स्मा ह्मा क्ष्मा ४॥ ॥क्मि ख्मि ग्मि घ्मि

ङ्मि च्मि छ्मि ज्मि झ्मि ञ्मि ट्मि ठ्मि ड्मि ढ्मि ण्मि त्मि थ्मि द्मि ध्मि न्मि प्मि

फ्मि ब्मि भ्मि म्मि य्मि र्मि ल्मि व्मि श्मि ष्मि स्मि ह्मि क्ष्मि ४॥ ॥

॥क्मी ख्मी ग्मी घ्मी ङ्मी च्मी छ्मी क्ष्मी॥ ॥क्मू ख्मू ग्मू घ्मू ङ्मू

क्मू ख्मू ग्मू घ्मू ङ्मू च्मू छ्मू ज्मू झ्मू ञ्मू ट्मू ठ्मू ड्मू ढ्मू ण्मू त्मू थ्मू द्मू
ध्मू न्मू प्मू फ्मू ब्मू भ्मू म्मू य्मू र्मू ल्मू व्मू श्मू ष्मू स्मू ह्मू क्ष्मू ४॥ ॥ १ क्मॄ ख्मॄ ग्मॄ
घ्मॄ ङ्मॄ च्मॄ छ्मॄ ज्मॄ झ्मॄ ॥ ॥ १ क्मे ख्मे ग्मे घ्मे ङ्मे च्मे छ्मे ज्मे झ्मे
ञ्मे ट्मे ठ्मे ड्मे ढ्मे ण्मे त्मे थ्मे द्मे ध्मे न्मे प्मे फ्मे ब्मे भ्मे म्मे य्मे र्मे
ल्मे व्मे श्मे ष्मे स्मे ह्मे क्ष्मे ४॥ ॥ १ क्मै
ख्मै ग्मै घ्मै ङ्मै च्मै छ्मै ॥ ॥ १ क्मो ख्मो ग्मो घ्मो ङ्मो च्मो छ्मो ज्मो

॥ ॥ १ क्मौ ख्मौ ग्मौ घ्मौ ङ्मौ च्मौ छ्मौ ॥ ॥ १ क्मं ख्मं ग्मं
घ्मं ङ्मं च्मं छ्मं ॥ ॥ १ क्मः ख्मः ग्मः [illegible]
[illegible] ४॥ ॥ १ र्क र्ख र्ग र्घ र्ङ र्च र्छ
र्ज र्झ र्ञ र्ट र्ठ र्ड र्ढ र्ण र्त र्थ र्द र्ध र्न र्प र्फ र्ब र्भ र्म र्य र्र र्ल र्व र्श
र्ष र्स र्ह र्क्ष ४॥ ॥ १ क्ल ख्ल ग्ल घ्ल ङ्ल च्ल छ्ल ज्ल झ्ल ञ्ल
ट्ल ठ्ल ड्ल ढ्ल ण्ल त्ल थ्ल द्ल ध्ल न्ल प्ल फ्ल ब्ल भ्ल म्ल य्ल र्ल ल्ल व्ल श्ल ष्ल स्ल

[illegible] ॥ [illegible]

[illegible] ॥

॥ [illegible] ॥ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ॥ [illegible]

[illegible] ॥ ॥ ।

[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]